

द्वितीय अध्याय : नरेंद्र कोहली के उपन्यास

i. पौराणिक और आध्यात्मिक प्रसंग

नरेंद्र कोहली आधुनिक समकालीन हिन्दी साहित्य के एक प्रख्यात रचनाकार हैं, जिन्होंने हिंदू धर्म की पौराणिक कथाओं को लेकर उपन्यास लिखते हुए हिन्दी साहित्य को एक नई धारा प्रदान की है। पौराणिक आख्यानों को लेकर रचनाएँ करते हुए उन्होंने हिन्दी साहित्य के एक नवीन युग का प्रारम्भ किया है। उनकी पौराणिक रचनाओं को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि महाकाव्यों का जो युग बीत चुका था उसे उन्होंने दोबारा शुरू कर दिया है। उनका उद्देश्य अपनी रचनाओं के द्वारा पौराणिक कथाओं की पुनरावृत्ति नहीं बल्कि उन घटनाओं को आधुनिक जीवन से जोड़कर देखना है। उदाहरण हेतु महाभारत कथा पर आधारित उनकी उपन्यास श्रृंखला 'महासमर' नाम से आठ खंडों में प्रकाशित है। इन खंडों को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि कथा भले ही महाभारत की है परंतु वह वर्तमान आधुनिक जीवन से जुड़ी हुई है और कथा घर की है। इसी प्रकार रामकथा को लेकर भी उन्होंने उपन्यासों की रचना की है। उन्होंने पौराणिक प्रसंगों को लेकर छोटे छोटे उपन्यास भी लिखा है, जैसे महाभारत के विराट पर्व पर आधारित उपन्यास 'सैरंध्री', महाभारत में वर्णित सत्यवती की कथा पर आधारित 'मत्स्यगंधा', महाभारत की ही कथा पर आधारित 'हिडिम्बा' तथा भगवान श्री कृष्ण द्वारा गीता में वर्णित कर्म सिद्धांत पर आधारित उपन्यास 'अभीज्ञान' आदि। अर्थात् उन्होंने पौराणिकता को एक व्यापक आकार में फैलाने का प्रयास किया।

पौराणिक विषयों पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी की दृष्टि का नरेंद्र कोहली पर प्रभाव :

प्रायः छह-सात दशकों के पश्चात आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक अवदान का मूल्यांकन करते समय ऐसा प्रतीत होता है कि आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य में एक ऐसे द्वार को खोला जिससे गुज़रकर नरेंद्र कोहली ने एक सम्पूर्ण युग की प्रतिष्ठा कर डाली। उनके विषय में लेखक नरेंद्र कोहली ने मुझे बताया कि "मुझे वो पसंद हैं बहुत, उनका प्रशंसक हूँ। जिस तरह से उपनिषद में से उपन्यास उन्होंने बनाया वो और कोई नहीं कर पाया है तो मुझे वो बहुत प्रिय हैं"।¹.. समकालीन रचनाकारों से नरेंद्र कोहली भिन्न हैं

उन्होंने जानीमानी कहानियों को समकालीन आधुनिक परिवेश से जोड़कर लिखा है। नरेंद्र कोहली की रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि आधुनिक जीवन में भी पौराणिक घटनाओं का उतना ही महत्व है जितना कि वह पहले था और यह सदा बना रहेगा तथा इसका समापन कभी नहीं होगा। साक्षात्कार के दौरान मैंने उनसे यह पूछा था कि पौराणिक विषयों को लेकर आप जो उपन्यासों का सृजन कर रहे हैं, इनका भविष्य क्या उज्ज्वल है ? आगे ये हमारी कहाँ तक काम आएँगी ? इसके उत्तर में कोहलीजी ने मुझे बताया था कि “अगर आज हज़ारों वर्षों के बाद आपको संस्कार चाहिए तो आप रामायण को पकड़ते हैं, महाभारत को पकड़ते हैं, उपनिषदों को पकड़ते हैं तो क्या कारण है कि ये चीजे आगे हमारी काम नहीं आएँगी ? क्यों नहीं आएँगी” ?2..

नरेंद्र कोहली के उपन्यासों का परिचय तथा उनमें निहित पौराणिक एवं आध्यात्मिक प्रसंग

1. अभिज्ञान (1981) :

इस उपन्यास में सनातन धर्म के कर्म दर्शन को आधार बनाकर श्रीमद् भगवद् गीता के कर्मयोग के दार्शनिक सिद्धांत को भगवान श्री कृष्ण और उनके मित्र सुदामा नामक ब्राह्मण की बातचीत के माध्यम से दर्शाया गया है। इसकी रचना कर्म सिद्धांत की पुष्टि के लिए नहीं बल्कि उसे समझने हेतु है। आलोच्य उपन्यास में कर्म मार्ग को पहचानने की बात की गई है। उपन्यास की शुरुआत सुदामा, उनकी पत्नी सुशीला और एक साधु बाबा के बीच वार्तालाप से शुरू होती है वह साधु बाबा और कोई नहीं बल्कि स्वयं भगवान श्री कृष्ण हैं जो साधु के रूप में कर्म मार्ग को समझाने आते हैं। लेखक ने यह बताया है कि किसी भी परिस्थिति में मानव को कर्म मार्ग का परित्याग नहीं करना चाहिए तथा उसे बहुमुखी प्रतिभाशाली होना चाहिए। “और जब उन्होंने निर्णय कर ही लिया है कि अपने मार्ग पर वे अपनी योग्यता और श्रम के भरोसे ही अग्रसर होंगे; आगे बढ़ने के लिए वे किसी भी इतर क्षेत्र की बैसाखी लगाना नहीं चाहते हैं...”3.. सांसारिक मानव को अपने कर्तव्य मार्ग में अविचलित रहना चाहिए तथा उसे उस मार्ग से कभी भी हटना नहीं चाहिए। अगर मनुष्य को अपने कर्तव्यों के प्रति लगाव भी होना चाहिए नहीं तो वह उसे सुचारू रूप से सम्पन्न

नहीं कर पाएगा। लेखक नरेंद्र कोहली ने इस पुस्तक की पृष्ठ संख्या 29 में 'मोह' शब्द का प्रयोग किया है जो कर्तव्य के प्रति लगाव की ओर ही संकेत करता हुआ दिखाई देता है।

भगवान सर्वत्र भ्रमण करते रहते हैं, उनका न तो किसी से वैर है और न ही किसी से मित्रता है। भगवान श्री कृष्ण का किसी निर्दिष्ट वस्तु, व्यक्ति, स्थान आदि से कोई लगाव नहीं है बल्कि उन्हें सभी से लगाव है अपने पराये का भेद नहीं है बल्कि सभी उनके लिए समान हैं। आम मनुष्य के मन में उसके परिवार के प्रति मोह रहता है वह उसे त्याग नहीं सकता। अभिज्ञान उपन्यास में कृष्ण के मित्र सुदामा को एक सामान्य पारिवारिक मानव के रूप में दर्शाया गया है जिसका लगाव अपने परिवार के प्रति बना रहता है। अर्थात् विवेकशील मनुष्यों के मन में वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना रहती है। एक शिक्षित समाज के गठन हेतु उपयुक्त वातावरण के सृष्टि की आवश्यकता है। इस उपन्यास में यह बताया गया है कि "गुरुकुल नगर के ठीक बीच तो नहीं है ; नगर के ऐश्वर्य से हटकर कुछ दूर सागर तट पर है"।⁴.. यह कथन उपन्यास में बाबा बने हुए भगवान श्री कृष्ण का है। यहाँ 'सागर तट' विशालता का प्रतीक है। ऐश्वर्य से हटकर शिक्षा ग्रहण करने से और देने से छात्रों तथा शिक्षकों का हृदय महानता और उदारता से परिपूर्ण होगा तथा शिक्षा का विकास सुचारू रूप से होगा।

2. सैरंध्री (2009) :

यह उपन्यास महाभारत के 'विराट पर्व' पर आधारित है जो द्रौपदी पर केंद्रित है। पाण्डवों का अज्ञातवास एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग है। किन्हीं कारणोंवश अगर किसी महिला को अपना आत्मपरिचय छुपाते हुए किसी अज्ञात स्थान पर रहना पड़े तो उसे समाज की विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पुरुष भी इसके शिकार हो सकते हैं। उपन्यास को पढ़ने से यह पता चलता है कि न केवल 'सैरंध्री रूपी द्रौपदी' बल्कि 'वृहन्नला' के रूप में अर्जुन, 'वल्लभ' के रूप में भीम, 'कंक' के रूप में युधिष्ठिर तथा 'तंत्रिपाल' के रूप में नकुल और सहदेव आदि को भी बहुत सारी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वह महिला जो अज्ञात स्थानों पर रह रही है अगर वह अधिक सुंदर है तब तो उसे और भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। विशेष रूप से दुराचारी पुरुषों

के कारण नारी का सौंदर्य उसके लिए अभिशाप बनकर रह जाता है। आलोच्य उपन्यास में कथा की शुरुआत द्रौपदी के सैरंध्री के रूप में मत्स्यदेश में आगमन और वहाँ की रानी सुदेष्णा के साथ बातचीत से शुरू होती है। कथा मत्स्य देश की रानी सुदेष्णा से द्रौपदी की भेंट से लेकर अन्त में 'कीचक' वध तक चलती है। इस उपन्यास में यह बताया गया है कि केवल मूल दुष्ट व्यक्ति की हत्या करने से ही नहीं होगा बल्कि उसके अनुगामियों का भी समूल विनाश करना होगा। पितृसत्तात्मक समाज में नारी के अधिकार सीमित हैं, भले ही राजपरिवार की ही नारी क्यों न हों। रानी सुदेष्णा भले ही विराटनगर की रानी हैं किंतु उनकी शक्ति राजमहल के भीतर तक ही सीमित है उसके बाहर नहीं। द्रौपदी से वे स्वयं कहती हैं कि वे राजमहल के अंदर वे उसकी रक्षा कर सकती हैं लेकिन बाहर नहीं। इस उपन्यास में यह भी देखने को मिलता है कि रानी ने द्रौपदी को अपने संरक्षण में रख तो लिया परंतु उन्हें भी पुरुष समाज की दुष्टता के कारण द्रौपदी की असुरक्षा का भय है। रानी सुदेष्णा का कहना है कि "पुरुषों के राज्य में स्त्री सदा इसी प्रकार असुरक्षित रहती है, सैरंध्री ! पर, तुम यहाँ मेरे पास रहोगी तो तुम्हें यहाँ कोई कुछ नहीं कहेगा"¹⁵.. लेखक नरेंद्र कोहली यह बताना चाहते हैं कि पुरुष समाज ने नारी को उच्च अधिकार देकर भी उसे सीमित कर दिया है।

3. हिडिम्बा (2012) :

यह उपन्यास महाभारत की कथा पर आधारित है जिसमें भीम का परिचय 'हिडिम्ब वन' में निवास करने वाली 'हिडिम्बा' नामक राक्षसी से होता है। हिडिम्बा का भीम के प्रति व्यवहार को दिखाकर लेखक ने यह यह बताया है कि एक राक्षस के मन में जब मानवीय गुणों का उदय हो सकता है तो जो वास्तव में मानव है उसके मन में मानवीय गुणों का विकास क्यों नहीं होता ? हिडिम्बा राक्षसी होते हुए भी मानवीय गुणों को अपनाने का प्रयास करती है, जहाँ वह कहती है कि "स्त्री जिससे प्रेम करती है, उसके मित्रों को अपना मित्र और उसके शत्रुओं को अपना शत्रु समझती है। पत्नी के सम्बंध, उसके पति के सम्बन्धों से ही तो निर्धारित होते हैं"¹⁶.. हिडिम्बा के इस कथन से उसके मन में पति के

प्रति समर्पण की भावना को दर्शाया गया है। हिडिम्बा का भीम से प्रभावित होना उसके मानवीय गुणों के कारण ही था। भीम और हिडिम्बा का परिणय राक्षस और मानव के बीच का परिणय नहीं बल्कि मानव के साथ एक ऐसी मानवी का विवाह है जिसने अपनी राक्षसी प्रवृत्ति को त्याग दिया है। इस उपन्यास में हिडिम्बा से भीम कहते हैं कि “मेरे पुत्र को नर-भक्षी राक्षस नहीं बनाओगी; उसे योद्धा बनाओगी”।^{7..} मनुष्य को एक विवेकशील प्राणी होने के कारण उसका यह परम कर्तव्य है कि उसकी आने वाली पीढ़ियों में मानवीय गुणों का विकास करते हुए उसे अपनी संतानों को प्रगतिशील विचारधारा सम्पन्न बनाना चाहिए। मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संतानों में मानवता के गुणों का विकास हो रहा है या नहीं।

4. महासमर, भाग 1 ‘बंधन’ (2015) :

नरेंद्र कोहलीजी ने महाभारत कथा पर आधारित ‘महासमर’ नाम से आठ खण्डों में उपन्यास रचना की है। प्रथम खंड में कथा सत्यवती के हस्तिनापुर आगमन से लेकर महामुनि व्यास द्वारा उन्हें ले जाने तक की कथा है। इस उपन्यास में यह बताया गया है कि बच्चों के चरित्र-निर्माण में माता-पिता और परिवेश की भूमिका होती है। इस उपन्यास में सत्यवती अपने बच्चों को गुरुकुल नहीं भेजने की हट करती है। “मेरा पुत्र शिक्षा ग्रहण करने ऋषि कुलों में नहीं जायेगा”^{8..} अगर माता-पिता अपने बच्चों के लिए शिक्षा के परिवेश का निर्माण नहीं कर पाते हैं तो बच्चों की यथोचित शिक्षा नहीं हो पाती है। साथ ही साथ उनके चरित्र का भी विकास सुचारू रूप से नहीं हो पाता है। बार-बार अपने बच्चों के मन में यह अहसास दिलाना कि तुम बड़े घराने के हो तथा उन्हें पूर्ण स्वतंत्रता दे देना उनका ध्यान न रखना कहीं न कहीं घातक भी हो सकता है। आलोच्य उपन्यास में सत्यवती के मन में यह अहंकार है कि उसके पुत्रगण राजकुमार हैं वे गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करने नहीं जाएँगे। वह ‘चित्रांगद’ और ‘विचित्रवीर्य’ के मन में बचपन से ही यह अहंकारी भावना जगाने का प्रयास करती है कि वे राजकुमार हैं और गुरु या शिक्षक राजकर्मचारी है, वे स्वामी हैं। अहंकार सबसे बड़ा शत्रु है। यदि एक माँ ही अपने बच्चों के मन में यह भाव जगाने का प्रयास करेगी कि शिक्षक तुम्हारा गुरु नहीं बल्कि वह राजकर्मचारी है और तुम उस गुरु के शिष्य नहीं

बल्कि उसके स्वामी हो वह एक वेतनभोगी सरकारी कर्मचारी है, तो बच्चों के मन में कभी भी अच्छे संस्कार पनप नहीं सकते। लेखक ने यह भी बताया है कि यदि किसी व्यक्ति को उसके अधिकारों से वंचित किया जाता है तो जो व्यक्ति उसे अधिकारों से वंचित कर रहा है वह स्वयं भी उससे वंचित हो सकता है। उदाहरण हेतु चित्रांगद और विचित्रवीर्य की ही मृत्यु हो गई।

लेखक नरेंद्र कोहली कहते हैं कि किसी वस्तु के लिए आधार की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। “खिलौना टूट जाये तो बच्चा इसलिए नहीं रोता कि खिलौने को टूट कर कष्ट हुआ होगा, वह तो इसलिए रोता है कि उसकी सम्पत्ति नष्ट हो गयी है। जिससे खेलकर उसे सुख मिलता था वह आधार नष्ट हो गया है”।⁹.. एक छोटे से बच्चे के विकास में माता और पिता दोनों ही आधार स्वरूप होते हैं। अगर किसी बच्चे को पिता का स्नेह मिलता है परंतु माता का नहीं मिलता तो उसके जीवन के लिए यह काफ़ी दुविधाग्रस्त स्थिती होती है। ठीक इसी प्रकार यदि संतान पिता के स्नेह से वंचित होता है तो भी स्थिती बच्चे के लिए संकटपूर्ण होती है। बात अगर शांतनुतनय भीष्म की की जाए तो यह कहा जा सकता है कि जन्म के उपरांत बालक देवव्रत को जब माता का साथ मिल रहा था तब वह पिता के साथ से वंचित था, ठीक इसी प्रकार जब उसे पिता का साथ मिला तो वह माता के साथ से वंचित हो गया।

5. महासमर, भाग 2 ‘अधिकार’ (2015) :

इस उपन्यास की कथा हस्तिनापुर में पांडवों के बाल्य काल से लेकर भगवान श्री कृष्ण और बलराम के हस्तिनापुर आगमन तक की कथा होने के साथ-साथ अक्रूर के आगमन की कथा भी इसी खंड में है। साथ ही साथ धर्मराज युधिष्ठिर के राज्याभिषेक तक की कथा भी है। वस्तुतः यह खंड अधिकारों की व्याख्या, अधिकारों के लिए हस्तिनापुर में निरंतर होने वाले षड्यंत्र, अधिकारों को प्राप्त करने की तैयारी तथा संघर्ष की कथा है। राजनीति में अधिकार प्राप्त करने के लिए होने वाली हिंसा तथा राजनीतिक त्रास के बोझ में दबे हुए असहाय लोगों की पीड़ा की कथा समानांतर चलती है। इस उपन्यास में सतोगुण से परिपूर्ण राजनीति तथा तमोगुण से पूर्ण राजनीति में अंतर स्पष्ट किया गया है। महाभारत में कृष्ण

का प्रवेश भी इसी खंड में होता है। इस उपन्यास में लेखक नरेंद्र कोहली ने अपने पात्र युधिष्ठिर के द्वारा एक सवाल उठाया कि “अपने घर कब जायेंगे माँ ?” यहाँ युधिष्ठिर के कथन के माध्यम से लेखक ने यही बताने का प्रयास किया है कि कितनी वेदनादायक परिस्थिति होने से व्यक्ति अपने घर में रहते हुए भी परायेपन का अनुभव करता है। मनुष्य को जब उसके अपने लोग ही उसके अधिकारों से वंचित करते हैं तो व्यक्ति के मन में प्रश्न आता है कि क्या उसका अपना कोई घर नहीं है ? कुंती ने कहा “यही हमारा घर है पुत्र ! हमें कहीं नहीं जाना है, हस्तिनापुर तुम्हारा है। तुम कुरु साम्राज्य के युवराज हो। तुम कहाँ जाने की बात कर रहे हो” ?¹⁰.. अर्थात् अगर माँगने से मनुष्य को अपना अधिकार न मिले तो उसे उसकी प्राप्ति के लिए संघर्ष करना चाहिए इसके बिना उसे कुछ प्राप्त नहीं हो पाएगा। आलोच्य उपन्यास में लेखक ने कुंती के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि अगर मनुष्य को अपने अधिकारों से कोई वंचित करता है तो उसके भय से उसे अपने क्षेत्र से पलायन नहीं करना चाहिए बल्कि अपने अधिकार क्षेत्र में रहते हुए ही उसे अपनी लड़ाई जारी रखना चाहिए।

कुंती कहती है कि “हस्तिनापुर के युवराज को यहाँ से हट कर कहीं नहीं जाना है। भावी सम्राट यदि अपना प्रासाद भी छोड़ देगा तो राज्य त्यागने में कितना समय लगेगा”¹¹.. यदि व्यक्ति लोगों के भय से अपनी पैतृक सम्पत्ति छोड़ कर या अपने घर को छोड़ कर कहीं दूर चला जाए तो दुष्ट जनों के द्वारा उसकी सम्पत्ति लूटी भी जा सकती है और ऐसी परिस्थिति भी आ सकती है कि उसे अपने अधिकारों से सदा के लिए वंचित भी होना पड़ सकता है। अतः मनुष्य को अधिकारों के लिए अपने क्षेत्र में रहते हुए ही संघर्ष करना चाहिए। आलोच्य पंक्तियों में कुंती अपने जेष्ठ आत्मज युधिष्ठिर को उसके अधिकारों के प्रति सचेत करती है।

स्वयं को अपने यथोचित अधिकारों से वंचित नहीं करना चाहिए। बात केवल आश्रय की नहीं बल्कि अपने अधिकारों को पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करने का है। मनुष्य को सदैव उसके अधिकारों के प्रति सचेत रहना चाहिए। इस उपन्यास में स्वतंत्रता का परिचय देते हुए बताया गया है कि “स्वतंत्रता आत्मनिर्भरता का दूसरा नाम है आचार्य ! प्रकृति ने तो

अपने विधान के अंतर्गत सबको ही पूर्ण स्वतंत्रता दिया है, स्वयं को अपनी अकर्मण्यता, लोभ, भय तथा अहंकार के कारण अपनी स्वतंत्रता से क्रमशः वंचित होते जाते हैं”।^{12..} अर्थात् अगर कोई व्यक्ति अपना कार्य आप ही सम्पन्न कर सकता है तो वह स्वतंत्र है। लेखक ने इस उपन्यास में गंगापुत्र भीष्म के द्वारा दुर्योधन को यह कहलवाया है कि “परम श्रेष्ठ धावक बनने के लिए तुम्हें अपनी क्षमताओं का विकास करना चाहिए; भीम के मार्ग में विघ्न उपस्थित करने से वह परम श्रेष्ठ धावक बने या न बने, किंतु तुम कभी धावक नहीं बन सकोगे”।^{13..}

6. महासमर, भाग 3 ‘कर्म’ (2015) :

इस उपन्यास की कथा पाण्डुपुत्र युधिष्ठिर के अभिषेक के बाद की कथा है। इस युवराज अभिषेक के पीछे मथुरा के यादवों की शक्ति हैं। एक ओर जहाँ अपनी राजनीति में उलझ जाने के कारण जब यादव पाण्डवों की सहायता नहीं कर पाते, दूसरी ओर गुरु द्रौण का वरदहस्थ भी पाण्डवों के सिर से हट जाता है तो दुर्योधन पाण्डवों को वारणावत में भस्म करने का षड्यंत्र रच डालता है। वारणावत से जीवित बच कर पाण्डव पाँचालों की राजधानी काम्पिल्य में पहुँचते हैं। पाण्डवों का वारणावत से काम्पिल्य पहुँचने की कथा इस खंड का महत्वपूर्ण अंश है। इसी खंड में पाण्डवों के हिडिम्ब वन में प्रवेश करने की कथा भी है साथ ही साथ उन्हें हिडिम्ब वन से किसने निकाला, उन्हें काम्पिल्य तक सुरक्षित पहुँचाने की व्यवस्था किसने की ? और उन्हें काम्पिल्य ही क्यों लाया गया ? इस संदर्भ में विदुर भगवान श्री कृष्ण और कृष्णद्वैपायन वेद व्यास के नाम लिये जा सकते हैं। लेखक के विचार में इस संदर्भ में तीनों की अपनी-अपनी भूमिका है। पाठक के मन में सदा एक प्रश्न काँटे के समान चुभता रहता है कि एक स्त्री के पाँच पुरुषों के साथ विवाह कर दिये जाने के पीछे क्या तर्क था ? उसका औचित्य क्या था ? लेखक ने अपने विशिष्ट, तथ्यपरक, तर्कसंगत शैली में इन प्रश्नों के समुचित उत्तर दिए हैं। पाण्डवों का हस्तिनापुर आगमन एक प्रकार का गृहागमन भी है और मृत्यु के मुख में लौटना भी है, किंतु इस समय वे असहाय व भयभीत नहीं हैं और यादवों तथा पाँचालों की सैन्य शक्ति उनके साथ है। यदि आज वे अपना अधिकार नहीं

माँगेंगे तो कब माँगेंगे। हस्तिनापुर लौटने के बाद पाण्डवों का सत्कार होता, किंतु धृतराष्ट्र की योजना उन महावीर पाण्डवों को पुनः हस्तिनापुर से निष्कासित कर, खाण्डवप्रस्थ वन में फेंक देती है। भीष्म, विदुर तथा व्यास के होते हुए भी पाण्डवों को हस्तिनापुर क्यों छोड़ना पड़ा ?... ऐसे ही और सहज प्रश्नों का समाधान इस उपन्यास में है। आलोच्य उपन्यास में राज्य या देश के आय के बारे बताया गया है कि वह जनता के लिए कल्याणकारी होना चाहिए। लेखक ने अपने पात्र युधिष्ठिर से शकुनि को कहलवाया है “राज्य की आय इसलिए होती है कि उससे प्रजा का कल्याण हो सके। यदि प्रजा का अकल्याण कर राज्य की आय बढ़ती है तो उससे अच्छा है कि राज्य की आय न बढ़े। दूसरी बात यह भी है कि राजसभा ने जब भी विचार किया होगा, यही विचार किया होगा कि मंदिरालयों और द्यूत गृहों से कितनी आय है। यह विचार कभी नहीं किया कि उस कर को प्राप्त करने के लिए हमारे राजकर्मचारियों पर कितना व्यय हो रहा है”¹⁴.. आलोच्य उद्धरण में लेखक कोहली ने यह बताया है कि सरकार जो जनता से कर वसूलती है उसका वास्तविक उद्देश्य जनकल्याण होना चाहिए राजकोष की पूर्ति उसका उद्देश्य या लक्ष्य नहीं होना चाहिए। जनता के कल्याण के लिए ही सरकार का चयन होता है। चाहे वह राजतंत्रात्मक सरकार हो या गणतंत्रात्मक सरकार उसका उद्देश्य देश की जनता का कल्याण ही होना चाहिए और जहाँ तक राजकोष का सवाल है उसका उपयोग भी देश की जनता के हित में ही होनी चाहिए। लेकिन यह बात आज की राजसत्ता भूल चुकी है। आज की शासन व्यवस्था मूल अपराधी को दण्डित नहीं करती वे स्वतंत्र रूप से घूमते हैं और निर्दोष लोग ही सज़ा पाते हैं। समाज के निरीह लोगों को लूटने वाले शासन और राजनीति से जुड़े होते हैं। वे लोग जनता के धन का भी प्रयोग अपने ही कल्याण हेतु करते हैं। आम जनता की सम्पत्तियों को लूट कर शासक वर्ग के प्रतिनिधि अपना ही पेट भरते हैं जनता का कल्याण नहीं करते। लेखक ने यह बताया है कि जनता का पैसा मंत्रियों के घरों में पहुँचता है। लेखक ने आलोच्य उपन्यास में विदुर के माध्यम से अपने पात्र युधिष्ठिर को कहलवाया है कि “यदि तुम्हें ज्ञात हो कि हाट में से लूटी गयी मूल्यवान वस्तुएँ उपद्रवियों के माध्यम से पुरोचन और कणिक के घर पहुँचा दी गयी है तो ? तुम क्या समझते हो कि

पुरोचन और कणिक इतने न्यायप्रिय हैं कि वे अपना अपराध स्वीकार कर दण्ड के लिए न्यायाधिकरण में आत्मसमर्पण कर देंगे ?¹⁵.. इस उपन्यास में धर्मराज युधिष्ठिर के माध्यम से यह बताया गया है कि “यदि दूषित वस्तुओं पर प्रतिबंध लगाएँगे और मनुष्यों की सद्वृत्तियों को प्रेरित करेंगे, तो कोई कारण नहीं है कि मानव का उचित विकास न हो”।¹⁶.. धर्मराज युधिष्ठिर के कथन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस संसार में मानव जाति का यथोचित विकास ही मनुष्य का लक्ष्य होना चाहिए।

7. महासमर, भाग 4 ‘धर्म’ (2015) :

‘महाभारत’ की अमर कथा पर आधारित उपन्यास श्रृंखला ‘महासमर’का यह चौथा खंड है। आलोच्य उपन्यास में राजधर्म की बात की गई है। इस उपन्यास की कथा पाण्डवों के हस्तिनापुर से ‘खाण्डवप्रस्थ में अपनी माता कुंती, भार्या ‘द्रौपदी,’ भगवान श्री कृष्ण और ‘बलराम ‘ के साथ आगमन की कथा है। यह एक ऐसा स्थान है जहाँ न कृषि है, न व्यापार। सम्पूर्ण क्षेत्र में ‘अराजकता फैली हुई है। ‘खाण्डवप्रस्थ ‘ की जनता यह नहीं जानती कि वे किसी राजा की प्रजा हैं। एक वृद्ध व्यक्ति कहता है कि “यह तो मैं अपने जीवन में पहली बार सुन रहा हूँ कि हम किसी राजा की प्रजा हैं। हाँ मैंने अपने पिता, पितामह से अवश्य सुना था कि कभी यहाँ कौरवों का राज्य हुआ करता था। राजा और राजपुरुष थे, प्रासाद और सभाएँ थीं।... किंतु मैंने तो अपने जीवन में दस्यु देखे हैं, राजपुरुष तो कभी कोई आया ही नहीं”।¹⁷.. अर्थात् आधुनिक युग में भले ही समाज में बहुत प्रगति हो चुकी है लेकिन फिर भी समाज की अराजकता की समाप्ति नहीं हो पा रही है। एक तरफ़ से कहा जाए तो यह कोई नयी बात नहीं है कि देश की जनता नहीं जानती कि देश का शासक कौन है ? बल्कि यह एक वास्तविक यथार्थ है क्योंकि आज के राजनेता देश की आम जनता से ज़मीनी स्तर पर नहीं जुड़ते हैं, जनता के सुख-दुःख की चिंता नहीं करते। आज की लोकतंत्रात्मक प्रणाली में बहुत से राजनेता ऐसे हैं जो साल भर जनता से जुड़ते नहीं हैं। वे ‘जनप्रतिनिधि’ तो कहलाते हैं परंतु जनता को उनके दर्शन नहीं होते। आधुनिक युग में केवल जब चुनाव नज़दीक आता है तभी उनके दर्शन होते हैं। शासक अगर जन सम्पर्क नहीं बढ़ाएगा तो देश

का संचालन कैसे कर पाएगा। पूर्वज कहते थे कि किसी समय यहाँ सुशासन हुआ करता था तब देश में शासक हुआ करते थे लेकिन अब राजा है राजबाड़ा है परंतु सुशासन का अभाव है। इसी उपन्यास में लेखक नरेंद्र कोहली लिखते हैं कि “जहाँ सुशासन नहीं होता वहाँ उर्वर भूमि बंजर हो जाती है और विशाल से विशाल नदी का जल सुख जाता है। लोग कहते हैं कि इंद्र वर्षा करता है, सूर्य अन्न पकाता है, पवन नदी के जल को वेग देता है, पर यदि मेरे कथन को छोटा मुँह बड़ी बात न माना जाए तो कहना चाहूँगा कि कोई कुछ नहीं करता, जो कुछ करता है सुशासन ही करता है। देश में सुशासन न हो, तो न समय से वर्षा होती है, न धूप में प्रखरता आती है, न नदी का जल बहता है और न उस पर नौका तैरती है”।¹⁸..

आलोच्य पंक्तियाँ उपन्यास के एक वृद्ध पात्र द्वारा कही गयी हैं। लेखक ने इन पंक्तियों के द्वारा यही बताया है कि पुरानी पीढ़ी सुशासन के महत्व को समझती थी।

8. महासमर, भाग 5 ‘अंतराल’ :

आलोच्य खंड में पाण्डव के द्यूत क्रीड़ा में पराजित होने के बाद की कथा है जिसमें पांडवों के वनवास की कथा है। कुंती पाण्डु के साथ शत-श्रृंग वनवास करने गयी थी। लाक्षागृह के जलने के बाद वह अपने पुत्रों के साथ हिडिम्ब वन में भी रह रही थी। महाभारत के अंतिम चरण में उसने धृतराष्ट्र, गाँधारी तथा विदुर के साथ वनवास किया था। किंतु अपने पुत्रों के विकट कष्ट के दिन वह उनके साथ वन में नहीं गयी। वह न द्वारिका गयी, न भोजपुर वह हस्तिनापुर में विदुर के घर ही रही। ऐसा क्यों ? पाण्डवों की सारी पत्नियाँ देविका, बलंधरा, सुभद्रा, करेनुमती और विजया अपने-अपने बच्चों के साथ अपने-अपने मायके चली गयीं लेकिन द्रौपदी कम्पिल्य नहीं गयी। वह पाण्डवों के साथ वन में रहीं। क्यों ? कृष्ण चाहते थे कि वे यादवों के बाहुबल से, दुर्योधन से पाण्डवों का राज्य छीनकर, पाण्डवों को लौटा दें, किंतु वे ऐसा नहीं कर सके। क्यों ? सहसा ऐसा क्या हो गया कि बलराम के लिए कौरव और पाण्डव एक समान प्रिय हो उठे। इतना ही नहीं दुर्योधन को यह अधिकार मिल गया कि वह भगवान श्री कृष्ण से सैनिक सहायता माँग सके और कृष्ण उसे यह भी न कह सके कि वे उसकी सहायता नहीं कर पाएँगे।

इतने शक्तिशाली सहायक होते हुए भी युधिष्ठिर क्यों भयभीत थे ? उन्होंने अर्जुन को किन अपेक्षाओं के साथ दैविक अस्त्र प्राप्त करने हेतु भेजा था ? अर्जुन क्या सचमुच स्वर्ग गये थे जहाँ सचमुच इस देह के साथ कोई नहीं जा सकता था। उन्हें क्या वास्तव में साक्षात् महादेव के दर्शन हुए थे ? अपनी पिछली यात्रा में अर्जुन ने तीन-तीन विवाह किए थे। ऐसे व्यक्ति के साथ क्या घटित हो गया था कि उसने उर्वशी के काम-निवेदन का तिरस्कार कर दिया। इस प्रकार के अनेक प्रश्नों के उत्तर निर्दोष तर्कों के आधार पर 'अंतराल में प्रस्तुत किए गए हैं। यादवों की राजनीति, पाण्डवों के धर्म के प्रति आग्रह तथा दुर्योधन की मदान्धता सम्बंधी यह रचना पाठक के समक्ष इस प्रख्यात कथा के अनेक नवीन आयाम उदघाटित करती है।

9. महासमर, भाग 6, 'प्रच्छन्न'(2015) :

महाकाल असंख्य वर्षों की यात्रा कर चुका, किंतु न मानव की प्रकृति परिवर्तित हुई है, न प्रकृति के नियम बदले हैं। उसका ऊपरी आवरण कितना भी भिन्न क्यों न दिखाई देता हो, मनुष्य का मनोविज्ञान आज भी वहीं है, जो सहस्रों वर्ष पूर्व था। बाह्य संसार के सारे घटनात्मक संघर्ष वस्तुतः मन के सूक्ष्म विकारों के स्थूल रूपांतरण मात्र हैं। अपनी मर्यादा का अतिक्रमण कर जाएँ तो ये मनोविकार, मानसिक विकृतियों में परिणत हो जाते हैं। दुर्योधन इसी प्रक्रिया का शिकार हुआ है। अपनी आवश्यकता भर पाकर भी वह संतुष्ट नहीं हुआ। दूसरों का सर्वस्व छीनकर भी वह शांत नहीं हुआ। पाण्डवों की पीड़ा उसके सुख की अनिवार्य शर्त थी। इसलिए वंचित पाण्डवों को पीड़ित और अपमानित कर सुख प्राप्त करने की योजना बनाई गई। घायल पक्षी को तड़पाकर बच्चों को क्रीड़ा का-सा आनंद आता है। मिहिरकुल को अपने युद्धक गजों को पर्वत से खाई में गिराकर उनके पीड़ित चीत्कारों को सुनकर असाधारण सुख मिलता है। अरब शेखों को ऊँटों की दौड़ में, उनकी पीठ पर बैठे बच्चों की अस्थियाँ टूटने और पीड़ा से चिल्लाने को देखकर सुख मिलता है। 'महासमर 6' में मनुष्य का मन अपने ऐसे ही 'प्रच्छन्न' भाव उदघाटित कर रहा है।

‘दुर्वासा’ ने बहुत तपस्या की है, परंतु न उसने अपना अहंकार जीता है न ही क्रोध। एक अहंकारी और परपीड़क व्यक्तित्व उस तापस के मन में प्रच्छन्न रूप से उपस्थित है। वह किसी के द्वार पर आता है तो धर्म के लिए नहीं। वह ‘तमोगुणी और रजोगुणी’ व्यक्तियों को वरदान देने के लिए और सतोगुण से भरे हुए लोगों को वंचित करने आता है। पांडव इस बात को जानते हैं कि तपस्वियों का यह समूह जो उनके द्वार पर आया है, यह सात्विक सन्यासियों का समूह नहीं है। वह एक प्रच्छन्न टिड्डी दल है, जो उनके अन्न भण्डार को समाप्त करने आया है, ताकि जो पांडव दुर्योधन के शस्त्रों से न मारे जा सकें वे अपनी भूख से मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ।

10. महासमर, भाग 7, ‘प्रत्यक्ष’ (2015) :

नरेंद्र कोहली के महाभारत कथा पर आधारित उपन्यास का यह सातवाँ खंड है। जिसमें युद्ध की तैयारी और युद्ध के प्रथम चरण अर्थात् भीष्म पर्व की कथा है। कथा तो वहीं है कि पांडवों ने अपने सारे मित्रों से सहायता माँगी। भगवान श्री कृष्ण से भी। पर लेखक नरेंद्र कोहली का यह सवाल है कि जो कृष्ण आज तक धर्मराज युधिष्ठिर से कह रहे थे कि वे कुछ न करें वस अनुमति दे दें तो यादव ही दुर्योधन का वध करवाकर पाण्डवों का राज्य उन्हें प्राप्त करवा देंगे, वे कृष्ण उद्योग की भूमि उपप्लव्य से उठ कर द्वारिका क्यों चले गए ? पांडवों को उनसे सहायता माँगने हेतु द्वारिका क्यों जाना पड़ा ? कृष्ण ने दुर्योधन को जो कि पाप में डूबा हुआ है उसे अपने परम मित्र अर्जुन के समकक्ष कैसे मान लिया ? प्रश्न यह भी है कि जो कृतवर्मा कृष्ण का समधी है और जिसने कौरवों की राजसभा से कृष्ण को सुरक्षित बाहर निकालने में अपनी जान की बाज़ी लगा दी वह दुर्योधन के पक्ष में युद्ध करने क्यों चला गया ? ऐसा क्या हो गया कि यादवों के सर्व प्रिय नेता कृष्ण जब पाण्डवों के पक्ष में लड़ने आए थे तब उनका कोई भाई और पुत्र उनके साथ नहीं था ? यादवों में इतने अकेले कैसे हो गए कृष्ण ?

जिस युधिष्ठिर के राज्य के लिए यह युद्ध होना था वह युद्ध के पक्ष में ही नहीं था ?

जिस अर्जुन के बल पर पाण्डवों को यह युद्ध लड़ना था वह अर्जुन ही अपना गांडीव त्याग

कर हताश हो कर बैठ गया था। उसे युद्ध नहीं करना था। जिन यादवों का सबसे बड़ा सहारा था उन यादवों में से कोई भी नहीं लड़ने आया तो महाभारत का युद्ध कौन लड़ रहा था ? कृष्ण ? अकेले कृष्ण ? ऐसे योद्धा जिनके हाथ में अपना कोई शस्त्र भी नहीं था ? अर्जुन शिखंडी को सामने रख कर अपने पितामह गंगापुत्र भीष्म का वध करता है अथवा पहले चरण में वह भीष्म को शिखंडी से बचाता रहता है और अपने जीवन और युग से हताश भीष्म को एक क्षत्रिय की गौरवपूर्ण मृत्यु देने हेतु उनका सहयोग करता है ? कर्ण का रोष क्या था ? और क्या था कर्ण का धर्म ? कर्ण का चरित्र कैसा था ? इस खंड में कुंती और कर्ण का प्रत्यक्ष साक्षात्कार होता है और कुंती ने प्रत्यक्ष किया है कर्ण की मान्यता को। बताया है उसे कि वह क्या कर रहा है और उसे क्या करना चाहिए ? बहुत कुछ प्रत्यक्ष हुआ महासमर नामक उपन्यास के इस सातवें खण्ड में। किंतु सबसे अधिक प्रत्यक्ष हुए हैं नायकों के नायक भगवान श्री कृष्ण। ऐसा लगता है कि एक बार कृष्ण प्रकट हो जाएँ तो अन्य सब पात्र उनके सामने वामन हो जाते जाते हैं। इसी खंड में कृष्ण अर्जुन को श्रीमद् भगवत गीता का उपदेश देते हैं। इस उपन्यास को पढ़ने के बाद लगेगा कि पाठक कृष्ण को बहुत जानते थे परंतु इतना तो नहीं जानते थे । एक तरफ़ से कहा जाए तो महाभारत के पात्रों के मूलभूत चरित्र से पाठकों का इस खंड में परिचय होता है।

11. महासमर भाग 8, निर्बन्ध (2015) :

निर्बन्ध महासमर उपन्यास का आठवाँ खंड है इसकी कथा 'द्रौण पर्व' से शुरू होकर 'शांति पर्व तक चलती है। कथा का अधिकांश भाग तो युद्ध क्षेत्र से हो कर ही गुज़रता है। किंतु यह युद्ध केवल शस्त्रों का ही नहीं है बल्कि मूल्यों और सिद्धांतों का भी है साथ ही साथ प्रकृति और प्रवृत्ति का भी है। घटनाएँ और परिस्थितियाँ अपना महत्व रखती हैं। वे व्यक्ति के जीवन की दशा और दिशा निर्धारित अवश्य करती हैं, परंतु घटनाओं का रूप यदि कुछ और होता तो क्या मनुष्यों के सम्बंध कुछ और हो जाते ? क्या उनकी प्रकृति बदल जाती ? यदि कर्ण को यह पहले ही पता लग जाता कि वह कुंती का पुत्र है तो क्या

वह पांडवों का मित्र बन जाता ? कृतवर्मा और दुर्योधन कृष्ण के मित्र क्यों नहीं बन पाएँ। बलराम श्री कृष्ण के भाई हो कर भी वे उनके पक्ष से क्यों नहीं लड़ पाएँ ? अंतिम समय तक वे केवल दुर्योधन की रक्षा का प्रबंध ही नहीं बल्कि पांडवों को पराजित करने का प्रयास क्यों करते हैं। ऐसे ही अनेक प्रश्नों से जूझता है यह उपन्यास।

इस बात पर ध्यान देना आवश्यक है कि महासमर नामक उपन्यास के पहले खंड का नाम 'बंधन' है जिसकी कथा गंगापुत्र भीष्म से शुरू होती है ठीक इसी प्रकार 'निर्बन्ध' की कथा शांतनु नंदन भीष्म पर ही समाप्त होती है। निर्बन्ध नामक महासमर उपन्यास के आठवें खंड में शांतनु और गंगा के आत्मज भीष्म के धराशायी होने पर गुरु द्रौण का पुत्र अश्वत्थमा काफ़ी प्रसन्न दिखाई देता है कि अब उसके पिता को कौरवों का सेनापति बनाया जाएगा। गुरु द्रौण के पुत्र को लगता है कि भीष्म का धराशायी होना कहीं न कहीं उसके पिता के लिए उन्नति का मार्ग दर्शाता है द्रौण जब कहते हैं कि "तो मुझे प्रसन्न होना चाहिए कि भीष्म के धराशायी होने से मेरी उन्नति का द्वार खुल गया है" ? तो उनका पुत्र कहता है कि "मैं तो यहीं समझता हूँ और यहीं मानता हूँ कि आपका ही प्रधान सेनापति चुना जाना स्वाभाविक, न्यायोचित तथा निश्चित है"।¹⁹.. इस कथन को दो तरह से देखा जा सकता है। एक तो यह कि व्यक्ति को दूसरों की मृत्यु से खुशी होती है। वह यह नहीं सोचता कि जिस संघर्ष में दूसरों की जान चली गई कभी उसमें उसकी भी जान जा सकती है। दूसरा रणभूमि में कभी भी मनोबल नहीं गँवाना चाहिए मन की शक्ति के कारण व्यक्ति कभी-कभी कठिन से कठिन परिस्थितियों पर विजयी बनता है। भीष्म के धराशायी होने पर आचार्य द्रौण का मनोबल कुछ गिर जाता है। उनके गिरे हुए मनोबल को उठाने के लिए ही उनका पुत्र उन्हें कौरव सेना का सेनापति बनाए जाने की बात करता है और साथ ही साथ वह यह भी कहता है कि "सेनापति वीरगति प्राप्त करता है तो उसका सहयोगी उपसेनापति, प्रधान सेनापति बन जाता है। सेनापति कभी नहीं मरता"।²⁰..

12. रामकथा पर आधारित उपन्यास युद्ध 1(प्रकाशन 2005) :

यह उपन्यास रामकथा पर आधारित है। आलोच्य उपन्यास में कथा की शुरुआत राजा बाली के एक जंगली भैंसे के साथ युद्ध करने की परिकल्पना से होती है। इस उपन्यास में यहीं बताया गया है कि अगर राज्य पर या देश पर कोई संकट आता है तो सबसे पहले राज्य के सैनिकों तथा राजकर्मचारियों का यह कर्तव्य है कि अपनी मातृभूमि या देश की रक्षा के लिए आगे बढ़ें राजा के आदेश की प्रतीक्षा न करें, किंतु एक सुशासक यह सोचता है कि वह देश का शासक है और पूरे देश की रक्षा का दायित्व उस पर है उसकी सामान्य प्रजा जिस प्रकार से उसकी है उसी प्रकार से उसके सैनिक भी उसकी प्रजा हैं। अतः जानभूझ कर वह इन्हें मृत्यु के मुख में कैसे डाल सकता है यह उनके साथ अन्याय है। किसी भी देश पर जब आक्रमण होता है तो यह उस देश के राजा की वीरता को चुनौती देना है। कोई भी क्षत्रिय वीर अपनी वीरता की चुनौती को सुनकर चुप नहीं रह सकता। संकट के समय छुप कर बैठना राजा की वीरता की नहीं बल्कि यह उसकी कायरता की निशानी है। इस उपन्यास में एक ओर जहाँ एक राजा के शत्रु के साथ वीरतापूर्ण संघर्ष को दर्शाया गया है वहीं दूसरी ओर शासक को बिना सोचे समझे एक विदेशी नागरिक को अपने देश के भीतर संरक्षण देने से क्या परिणाम राजा और उसके देश के निवासियों को भुगतना पड़ता है यह दिखाया गया है।

मायावी नामक एक विदेशी अपराधी को बाली के सामने पेश किया जाता है तब बाली उससे पूछते कि उसने कौन सा अपराध किया है ? वह कहता है “थके मन को विश्राम देना”। तब बाली कहते हैं कि “यह तो कोई अपराध नहीं है विदेशी”।²¹.. शासक वर्ग ही समाज में कहीं न कहीं ऐसे विदेशी व्यापारियों को व्यापार करने की अनुमति देता है जो अपराधी हैं। लेकिन शासकवर्ग अनुमति देने से पहले इस बात की जाँच-पड़ताल नहीं करता कि वह व्यक्ति कैसा है ? सत्तापक्ष केवल देश की आय वृद्धि ,मुनाफ़ा वृद्धि और कर वृद्धि की बात करता है परंतु देश की जनता की सुरक्षा और भलाई की बात नहीं करता है। यहाँ बात यह है कि देश की आय में वृद्धि तो हो परंतु वह सकारात्मक रूप से हो।

आलोच्य उपन्यास में यह भी बताया गया है कि व्यक्ति को अपना विकास स्वयं के साधनों से ही करना चाहिए अर्थात् उसे आत्मनिर्भर होने का प्रयास करना चाहिए। उपन्यास के पात्र सुग्रीव कहते हैं कि “वानर जाति अत्यंत निर्धन है। हम प्रयत्न कर रहे हैं कि अपने परिश्रम से अपने साधनों का विकास करें, ताकि हमारी स्थिति कुछ अच्छी हो सके। ऐसे में यदि यहाँ कुछ ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी जाए, जिससे परिश्रम का मूल्य कम हो जाए और विलास का बाहुल्य हो जाए, तो हमारी जाति किसी भी प्रकार आगे नहीं बढ़ पाएगी”।²².. आलोच्य पंक्तियों के माध्यम से लेखक नरेंद्र कोहली यह बताना चाहते हैं कि भारत की निर्धन जनता को सरकार के द्वारा विकास का अवसर दिया जाना चाहिए और साथ ही साथ देश की जनता को भी प्रगति का प्रयास करते रहना चाहिए। देश की गरीब जनता को उसके परिश्रम का मूल्य मिलना चाहिए उनके परिश्रम को लेकर अन्याय नहीं किया जाना चाहिए।

13. युद्ध भाग 2 (2005) :

इसमें कथा की शुरुआत पवनपुत्र हनुमान के लंका प्रवेश करने के बाद से होती है। लंका में प्रवेश करने के बाद इस विशाल नगरी को देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। यहाँ यहीं बताया गया है कि संघर्षशील व्यक्ति को अपने वास्तविक लक्ष्य तक जाने से पूर्व बड़ी से बड़ी बाधाओं का अतिक्रमण करना पड़ता है। लेखक नरेंद्र कोहली लिखते हैं कि “लंका नगरी स्वयं अपने आप में एक अथाह सागर है जिसका कोई ओर-छोर नहीं है। जिस ओर निकल जाओ, कोई अंत नहीं, कोई सीमा नहीं। जब तक लंका में प्रवेश नहीं किया था, तब तक तो यहीं लगता था कि सागर-संतरण ही सबसे बड़ी समस्या है”।²³.. आलोच्य पंक्तियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लंका नगरी में अनंत संकट है। एक ओर जहाँ लंका नगरी के वैभवशाली राजमहल और अट्टालिकाओं, महालयों आदि का वर्णन किया गया है वहीं दूसरी ओर झुग्गियों, झोपड़ियों आदि का भी वर्णन है जहाँ उपेक्षित दरिद्र जनता निवास करती है। एक तरफ़ से कहा जाए तो यह कहा जा सकता है कि जिस ‘विकसित अर्थव्यवस्था और विकसित राष्ट्र की बात की जाती है उसके लिए भारत सम्पूर्ण रूप से अभी तक तैयार नहीं हो पाया है। उपन्यास में यह बताया गया है कि “इतने साफ़-

सुथरे नगर में इतने गंदे लोग कहाँ से आ गए ; और उन्हें भी मनुष्य मानकर उनके प्रति करुणा और ममता रखकर देखो तो स्पष्ट दिखाई पड़ने लगता था कि वे धन के विषम तथा अन्यायपूर्ण वितरण में षड्यंत्र में फँसे, कष्ट पाते हुए दुखी लोग थे”²⁴.. इस आधुनिक युग में भी आज बहुत से लोग कष्ट से जी रहे हैं। बड़े-बड़े राजनेताओं के यहाँ संसार की सारी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। धन का विषम वितरण या रोज़गार का असमान वितरण विकास की गति धीमी होने का कारण है इससे देश की आम जनता को बड़े लोगों विशेष रूप से राजनेताओं के माध्यम से कष्ट झेलना पड़ता है। आलोच्य उपन्यास में पवनपुत्र हनुमान के लंका में प्रवेश करने के उपरांत विभिन्न स्थानों से भ्रमण करते हुए लंका के राजा रावण के शयन कक्ष को देखने तथा अशोक-वाटिका में प्रवेश करने का वर्णन किया गया है।

अत्याचारी और दुष्ट राजा का लक्षण सीता के द्वारा यहाँ दर्शाया गया है जिसमें वे कहती हैं कि “प्रत्येक दुष्ट राजा कठोर भाषी और क्रूर कर्मी होता है और तुम्हारा राजाधिराज दुष्ट ही नहीं वह तो नीच भी है”²⁵.. सीता द्वारा कथित इन पंक्तियों के माध्यम से यह पता चलता है कि पुरुष तांत्रिक शासन में नारी के अत्याचार के कारण शासक की दुष्टता का बोध हो चुका है। गौरतलब है कि जहाँ नारी शोषित होती है वहीं विनाश की छाया चली आती है।

14. अभ्युदय भाग 1 (2001) :

यह उपन्यास भी रामकथा पर आधारीत है। इस उपन्यास में यह बताया गया है कि दुष्ट और दुराचारी व्यक्ति समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को जन कल्याणपरक कार्य नहीं करने देते। उपन्यास के पात्र ऋषि विश्वामित्र कहते हैं कि -

“जब कभी मैं किसी नए प्रयोग के लिए यज्ञ आरम्भ करता हूँ, ये राक्षस इसी प्रकार मेरे आश्रम के साथ रक्त और मांस का खेल खेलते हैं। रक्त-मांस की इस वर्षा में कोई भी यज्ञ कैसे सम्पन्न हो सकता है।”²⁶.. आज समाज में दुष्ट और अत्याचारियों की मात्रा इतनी अधिक है कि इनका कोई विरोध भी नहीं कर सकता। अगर कोई विरोध करता है तो उसे भारी क्रीमत चुकानी पड़ती है कभी-कभी विरोध करने वाले व्यक्ति को अपने जान से भी

हाथ धोना पड़ सकता है। लेकिन तब भी अन्याय का विरोध करना ही चाहिए। यहाँ 'आर्या अनुगता' एक सभ्य और शिक्षित समाज की नारी है जिसके साथ असभ्य और बर्बर लोगों द्वारा बदसलूकी होता है गहन और सुकंठ ने इस बात का अंदाज़ा लगा लिया था कि ये राक्षस उसके साथ किसी भी प्रकार का भयंकर ग़लत आचरण कर सकते थे।

15. मत्स्यगंधा (2011) :

यह उपन्यास नरेंद्र कोहली द्वारा लिखित महाभारत की एक प्रमुख पात्र 'सत्यवती' पर आधारित है जो दासराज की पालिता पुत्री, हस्तिनापुर के महाराज प्रतीपनंदन शांतनु की पत्नी और चित्रांगद तथा विचित्रवीर्य की माता थी। वह मुनि वेदव्यास की भी माता थी जो पराशर ऋषि के पुत्र थे। इस उपन्यास में पिता के सुख के लिए एक पुत्र के त्याग का वर्णन है। कथा की शुरुआत गंगापुत्र भीष्म के दासराज के यहाँ उनकी पुत्री सत्यवती जिसका नाम मत्स्यगंधा भी है उसका हाथ अपने पिता के लिए माँगने आने से शुरू होती है और राजा शांतनु एवं सत्यवती के परिणय से लेकर चित्रांगद और विचित्रवीर्य का जन्म, राजा शांतनु की मृत्यु से लेकर भरत वंश की नई पीढ़ी के हाथों राजपाठ सौंपते हुए सत्यवती, अम्बिका और अम्बालिका का व्यास मुनि के साथ चले जाने तक चलती है। इस नई पीढ़ी को वे लोग गंगापुत्र भीष्म की देख-रेख में छोड़ कर जाते हैं। भीष्म के मन में भी जाने की अभिलाषा थी परंतु पारिवारिक उत्तरदायित्व के बंधन में बंधे होने के कारण वे जा नहीं पाते हैं।

16. अभ्युदय भाग 2 (2008) :

अभ्युदय भाग 2 भी रामकथा पर आधारित है। इस उपन्यास की कथा की शुरुआत दुंधुभि नामक एक वन्य भैंसे के साथ संघर्ष से शुरू होकर 'मायावी' नामक राक्षस से संघर्ष, 'मारीच वध, रावण के द्वारा सीता मैया का हरण, वानरराज वाली का मायावी राक्षस से संघर्ष करने हेतु उसे खोजते हुए बहुत दूर निकल जाने के कारण और कई दिनों तक उनके न लौटने से किष्किन्धा के राजा के रूप में वाली के छोटे भाई सुग्रीव के राज्यभिषेख की कथा भी है। लेखक नरेंद्र कोहली ने सुग्रीव को एक ऐसे राजा के रूप में दर्शाया है जिन्होंने

शासन की बागडोर अपने हाथों में लेते ही देश की प्रगति के लिए जनता की शिक्षा को सर्वाधिक महत्व दिया। लेखक ने यहाँ सुग्रीव के माध्यम से देश से प्रतिभा पलायन को रोकने पर ज़ोर दिया है क्योंकि यह भी भारत की एक समस्या है। लेखक लिखते कि “सुग्रीव गम्भीर हो गए, आज से मंत्रियों, सामंतों तथा यूथपतियों तथा धनिकों के पुत्रों के लिए विदेश जाने की प्रथा बंद की जाती है”¹²⁷.. सुग्रीव के माध्यम से लेखक ने एक सुशासक के दृष्टिकोण को स्पष्ट किया है। एक बार अगर देश में एक उच्च स्तरीय शिक्षण -संस्थान स्थापित हो जाए तो उसी के संस्थान पूरे देश में स्थापित हो और जहाँ यह संस्थान पहले स्थापित होगी वहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले नवयुवकों का यह कर्तव्य होगा कि वे इन संस्थानों में शिक्षा प्रदान करने का कार्य करें। किष्किन्धा को नगर के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि केवल नगर शिक्षित होने से ही देश का विकास नहीं होगा बल्कि शहरी इलाकों के साथ-साथ देश के जो ग्रामीण क्षेत्र हैं वहाँ भी शिक्षा की रोशनी फैलानी होगी। अर्थात् समाज के अंतिम पायदान पर जो व्यक्ति खड़ा है उस तक भी शिक्षा का प्रकाश फैलना आवश्यक है नहीं तो राष्ट्र का पूर्ण विकास सम्भव नहीं होगा। आगे सुग्रीव कहते हैं कि “मैं चाहता हूँ कि अगले बारह वर्षों में हमारी पीढ़ी का कोई बालक, कोई बालिका अशिक्षित न रह जाए”¹²⁸.. अर्थात् इसमें यही दिखाया गया है कि किसी देश को सुविकसित और समृद्धशाली बनाने हेतु ऐसी बात नहीं है कि उस देश तथा उस समाज के पुरुषों को ही शिक्षित होना होगा बल्कि महिलाओं को भी शिक्षित होना होगा। क्योंकि एक सुशिक्षित माता-पिता ही एक सुशिक्षित परिवार का निर्माण कर सकते हैं।

17. शिखंडी (2020) :

यह नरेंद्र कोहली का महाभारत कथा पर आधारित उपन्यास है। इस उपन्यास में कथा की शुरुआत काशी के महाराज की तीन कन्याओं अम्बा, अम्बिका और अम्बालिका की स्वयंवर सभा से शुरू होकर कुरुक्षेत्र के दसवें दिन के युद्ध में शर शैया पर लेट कर शांतनुपुत्र भीष्म का पाण्डवों को विभिन्न उपदेश देने तक चलता है। भीष्म के मन में भी अम्बा के प्रति एक आकर्षण जाग उठता है। उदाहरणतया भीष्म कहते हैं कि “पर अम्बा सुंदरी है। हस्तिनापुर की राजवधु होती तो राजप्रासाद की शोभा होती”¹²⁹.. लेखक नरेंद्र

कोहली आगे लिखते हैं कि 'क्या सुंदर है अम्बा में ? क्या सुंदर है इस राजकुमारी में क्या असाधारण है ? कुछ भी ऐसा सुंदर नहीं है'। 'लेखक ने यहीं बताने का प्रयास किया है कि मनुष्य को सर्वदा अपने विवेक से काम लेना होगा। पुरुष का नारी के प्रति आकर्षण कहीं न कहीं उसकी दुर्बलता की निशानी है। लेखक लिखते हैं कि "उनके विवेक ने कहा यौवन का आकर्षण ही सबकुछ होता है।... प्रकृति ने मनुष्य को बनाया ही कुछ ऐसा है। नारी के रूप में लोहे के कण डाल दिए हैं और पुरुष की दृष्टि में चुम्बक के तत्व।³⁰.. नारी और पुरुष का आकर्षण एक स्वाभाविक वस्तु है। लेकिन मनुष्य को सर्वदा अपने विवेक से काम लेना चाहिए, उसे विवेकशील होना चाहिए। मन में आकर्षण आते ही मनुष्य को उस और नहीं बढ़ना चाहिए। व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि क्या यह उसके लिए उचित कदम है या अनुचित। यह बात नारी और पुरुष दोनों पर ही लागू होती है। नारी के प्रति आकर्षण कामात्मक नहीं होना चाहिए क्योंकि यह दुर्बलता है विनाश का प्रतीक है।

18. कुंती (2012) :

कुंती नामक यह उपन्यास भी नरेंद्र कोहली विरचित है और यह महाभारत कथा पर आधारित है। इस उपन्यास को महाभारत की पात्र कुंती को आधार बनाकर लिखा गया है। आलोच्य उपन्यास में कथा की शुरुआत पृथा या कुंती की स्वयंवर सभा से प्रारम्भ होती है और कथा का समापन महाभारत के युद्ध में कर्ण की मृत्यु से होती है। इस उपन्यास में यह बताने का प्रयास किया गया है कि घर-परिवार में ऐसे परिवेश का निर्माण नहीं हो पाता जिसमें अपनी निजी या व्यक्तिगत समस्याओं की चर्चा आपस में किया जा सके। कितनी दुविधाग्रस्त स्थिति है कि पाण्डु की प्रजनन से जुड़ी समस्या की जानकारी परिवार में किसी भी व्यक्ति को नहीं है। बार-बार वह अपनी भार्या से क्यों दूर भागता चला जाता है इसके वास्तविक कारण की जानकारी किसी को नहीं है न ही कोई मूल कारण जानने की चेष्टा करता है और न ही पाण्डु किसी को अपनी समस्या के बारे में बताता है। लेखक नरेंद्र कोहली यह बताना चाहते हैं कि जब तक मनुष्य अपनी कोई भी समस्याओं की चर्चा आपस में अपने लोगों के बीच में नहीं करेगा तब तक इसका समाधान नहीं होगा। दूसरी

बात यहाँ यह है कि समाज में बड़े-बुजुर्ग संतान जब बड़ी होती है चाहे वह लड़का हो या लड़की उसके विवाह की चिंता पहले करने लगते हैं। वे यह नहीं सोचते हैं कि वैवाहिक बंधन में आबद्ध होने हेतु उनमें पूर्ण योग्यता है या नहीं कोई कमी तो नहीं है। विवाह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि स्वयं को योग्य बनाना ही महत्वपूर्ण है। पाण्डु की यह स्थिति कुंती के लिए क्या दुखदायी नहीं है ? यहाँ लेखक नरेंद्र कोहली पाठक को यह बताना चाहते हैं कि मानव जीवन में कोई भी समस्या क्यों न हो जब तक उसके मूल कारण का समाधान नहीं हो पाएगा तब तक समाज की प्रगति नहीं हो पाएगी। गंगापुत्र भीष्म यह नहीं समझ पाए कि पाण्डु कुंती से दूर-दूर क्यों रहता है और वे पाण्डु का दूसरा विवाह मद्र देश की राजकुमारी माद्री से रचा देते हैं। आलोच्य उपन्यास में यह भी बताया गया है कि कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घर के बड़े वजुर्ग अपने घर में आने वाली बहुओं की समस्याओं के बारे में नहीं पूछते। जब एक नई-नवेली दुल्हन घर पर आती है तो उसके लिए यह परिवेश एकदम ही नवीन होता है तब घर के बड़ों को उसकी सुविधा असुविधाओं के बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए। लेखक उपन्यास में अपने पात्र 'कुंती' का गंगापुत्र 'भीष्म' के विषय में अपना दृष्टिकोण स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि "कैसे धर्मात्मा हैं वह ?... एक बार भी कुंती से नहीं पूछा, पुत्री ! कल पाण्डु तुम्हें ब्याह कर लाया है और आज दिग्विजय के लिए जा रहा है। क्यों ? क्या तुम दोनों में कोई कहा-सुनी हुई ? कोई मत-भेद ? क्या तुम पाण्डु को नहीं भायी ? या पाण्डु तुम्हें प्रिय नहीं लगा ? कुछ नहीं पूछा भीष्म ने; और उठ कर चल दिए माद्री को लाने। क्यों उन्होंने मान लिया कि पाण्डु को कुंती प्रिय नहीं लगी ? और यदि ऐसा हुआ तो उसमें कुंती का ही दोष क्यों है ? पाण्डु को तत्काल दूसरी पत्नी क्यों चाहिए ?..."³¹.. धर्मात्मा के लक्षण को स्पष्ट करते हुए लेखक ने कुंती के दृष्टिकोण को इन शब्दों में स्पष्ट किया है "कहते हैं कि वह धर्मात्मा हैं। पर कैसे धर्मात्मा हैं भीष्म ? केवल अपनी टेक पर अड़े रहना ही तो धर्म नहीं हो सकता। सृष्टि में इतने जीव हैं, सबको यहीं रहना है। उन सबकी सुविधाओं के बीच सामंजस्य खोजना ही तो धर्म है, न्याय

है, नीति है”¹³².. संसार के सभी मनुष्यों के प्रति समान दृष्टि रखना ही धार्मिक पुरुष का परम कर्तव्य होना चाहिए।

19. अहल्या (2019) :

इस उपन्यास में लेखक नरेंद्र कोहली ने यह दर्शाने का प्रयास किया कि जो पुरुष वर्ग है या जो सत्ताधारी वर्ग है वह किस प्रकार समाज में महिलाओं का अत्याचार करता है। वहीं शासन की बागडोर को अपने हाथों में रखता है। दुष्ट और चरित्रहीन व्यक्ति नारियों में केवल भोग को ही देखता है। ऐसी बात नहीं है कि लम्पट और चरित्रहीन व्यक्ति उच्च कुलशील नारी को ही भोग की दृष्टि से देखता है बल्कि निम्न वर्ग की महिलाओं को भी इसी दृष्टि से देखता है। लेखक नरेंद्र कोहली लिखते हैं कि “उसी ग्राम में गहन नामक एक व्यक्ति रहता है। कुछ दिन पूर्व आर्य युवकों का एक दल गहन की कुटिया में गया था। युवकों ने मदिरा इतनी अधिक पी रखी थी कि उन्हें उचित अनुचित का बोध नहीं था। उन्होंने सीधे स्वयं गहन के पास जाकर माँग की कि वह अपने परिवार की स्त्रियाँ उनकी सेवा में भेज दें। नीच जाति की स्त्रियों की भी कोई मर्यादा होती है क्या ? वे होती ही किस लिए हैं सवर्ण आर्यों के भोग के लिए ही तो”¹³³.. यानी कि नारी के प्रति पुरुषवर्ग की भोगवादी दृष्टि रहती है। ऐसे लोग भले ही स्वयं को उच्च वर्ग का दावा करते हैं, वे भले ही स्वयं को श्रेष्ठ आर्यों में गिनते हैं परंतु वे यह जानते ही नहीं कि आर्य किसे कहा जाता है। आज का अत्याचारी समाज यह भूल गया है कि आर्य शब्द का अर्थ होता है पूजनीय। इस गद्यांश में जिस बात की चर्चा की गई है यह आज के दलित समाज की महिलाओं पर होने वाले अत्याचार का एक जीता-जागता उदाहरण है। मन में एक सवाल उठता है कि आज मनुष्य किस समाज में जी रहा है जो यह सोचता है कि ‘नीच जाति की स्त्रियाँ होती किस लिए हैं सवर्ण आर्यों के भोग के लिए ही तो’ ? भले ही मानव 21वीं सदी में जी रहा है, व्यक्ति चाँद पर घर बनाने की बात सोच रहा है, उसने मंगल अभियान भी करने का प्रयास किया है किंतु वह अपनी मानसिकता को अब तक त्याग नहीं पाया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1 लेखक नरेंद्र कोहली से 15/11/2020 को रविवार के दिन मेरे द्वारा लिया गया साक्षात्कार
- 2 लेखक नरेंद्र कोहली से 15/11/2020 को रविवार के दिन मेरे द्वारा लिया गया साक्षात्कार
- 3 नरेंद्र कोहली, अभिज्ञान, पृष्ठ संख्या 6
- 4 नरेंद्र कोहली, अभिज्ञान, पृष्ठ संख्या 13
- 5 नरेंद्र कोहली, सैरंध्री, पृष्ठ संख्या 13
- 6 नरेंद्र कोहली, हिडिम्बा, पृष्ठ संख्या 26
- 7 नरेंद्र कोहली, हिडिम्बा, पृष्ठ संख्या 95
- 8 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 1 बंधन, पृष्ठ संख्या 85
- 9 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 1 बंधन, पृष्ठ संख्या 10
- 10 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 2 अधिकार, पृष्ठ संख्या 11
- 11 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 2 अधिकार, पृष्ठ संख्या 11
- 12 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 2 अधिकार, पृष्ठ संख्या 151
- 13 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 2 अधिकार, पृष्ठ संख्या 53
- 14 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 3 कर्म, पृष्ठ संख्या 28
- 15 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 3 कर्म, पृष्ठ संख्या 33, 34
- 16 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 3 कर्म, पृष्ठ संख्या 27
- 17 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 4 धर्म, पृष्ठ संख्या 18
- 18 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 4 धर्म, पृष्ठ संख्या 19

- 19 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 8 निर्बन्ध, पृष्ठ संख्या 1
- 20 नरेंद्र कोहली, महासमर भाग 8 निर्बन्ध, पृष्ठ संख्या 1
- 21 नरेंद्र कोहली, युद्ध भाग 1, पृष्ठ 13
- 22 नरेंद्र कोहली, युद्ध भाग 1, पृष्ठ 14
- 23 नरेंद्र कोहली, युद्ध भाग 2, पृष्ठ संख्या 1
- 24 नरेंद्र कोहली, युद्ध भाग 2, पृष्ठ संख्या 1
- 25 नरेंद्र कोहली, युद्ध भाग 2, पृष्ठ संख्या 31
- 26 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग 1, पृष्ठ संख्या 10
- 27 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग 2, पृष्ठ संख्या 92
- 28 नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग 2, पृष्ठ संख्या 93
- 29 नरेंद्र कोहली, शिखंडी, पृष्ठ संख्या 12
- 30 नरेंद्र कोहली, शिखंडी, पृष्ठ संख्या 12
- 31 नरेंद्र कोहली, कुंती, पृष्ठ संख्या 19
- 32 नरेंद्र कोहली, कुंती, पृष्ठ संख्या 19
- 33 नरेंद्र कोहली, अहल्या, पृष्ठ संख्या 24, 25

ii. विविध प्रसंग

अब तक कोहलीजी के उपन्यासों में पौराणिक प्रसंगों पर बात की गई है। लेकिन ऐसी बात नहीं है कि उन्होंने केवल पौराणिक प्रसंगों को लेकर ही उपन्यासों का सृजन किया है बल्कि विविध आधुनिक प्रसंगों को लेकर उन्होंने अपने उपन्यास साहित्य के लिए अपनी लेखनी भी चलाई है। जिसमें मुख्य रूप से उनके निम्नलिखित उपन्यास आते हैं जो इस प्रकार हैं।

- i. पुनरारंभ, प्रकाशन (प्रथम संस्करण 1994)
- ii. क्षमा करना जीजी (प्रथम संस्करण 1995)
- iii. प्रीति-कथा (प्रथम संस्करण 2005)
- iv. वरुणपुत्री, इसमें पुराण, इतिहास और समकालीन घटनाओं तथा फैंटेसी का एक अदभुत ताना-बाना बुना गया है। (प्रथम संस्करण 2017)
- v. सागर-मंथन, यह उपन्यास आधुनिक बोध से जुड़ा हुआ है और इसका प्रकाशन 2018 में हुआ था। नाम से यह भले ही पौराणिक प्रतीत होता हो परंतु यह बिल्कुल भी पौराणिक नहीं है।
- vi. स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित छः खंडों में रचित तोड़ो कारा तोड़ो

i. पुनरारंभ (1994) :

इस उपन्यास का वास्तविक लेखक नरेंद्र कोहली के पिता 'परमानंददास कोहली हैं। जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण वे इस क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाए थे। जब उन्होंने यह देखा कि उनका पुत्र इस क्षेत्र में रुचि रखता है तो उन्होंने यह कार्य अपने पुत्र को सौंप दिया। लेखक कहते हैं कि "प्रस्तुत उपन्यास उनके द्वारा लिखे गये उस दीर्घ उपन्यास के एक अत्यंत संक्षिप्त अंश का पुनर्लेख मात्र है। अतः मूल लेखक होने का श्रेय न लेकर, मैं स्वयं को सम्पादक या पुनर्लेखक ही मानता हूँ"।¹..

इस उपन्यास का प्रमुख पात्र बाबू गोकुलचंद हैं जो एक सरकारी दफ्तर में हेडक्लर्क हैं। जिनकी भेंट गंगा नामक एक युवती से होती है। तत्कालीन समय में पहाड़ी वन्य प्रदेशों में रहना अपने पारिवारिक लोगों को अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ कर रहना या फिर एक महिला को एक पुरुष के साथ अविवाहित रूप से रहना काफ़ी चुनौतीपूर्ण होता था। समाज इस प्रकार के सम्बंधों को बहुत ही घृणित नज़रिए से देखता है इस बात को गंगा समझ पा रही थी। अतः वह गोकुलचंद से कहती है कि “हमारा विवाह कब होगा” ?2.. वह गोकुलचंद से यह भी कहती है कि “तुम मेरे साथ विवाह नहीं करोगे तो मैं तुम्हारे साथ रहूँगी कैसे” ?3.. बिना विवाह के भी साथ रहा जा सकता है परंतु भारतीय जीवन की दृष्टि से इस प्रकार के रहन-सहन को मान्यता नहीं दिया जाता है। आज आधुनिक समाज में इस प्रकार के सम्बंध का दृश्य देखने को मिलता है हालाँकि यह भारतवर्ष की परम्परा नहीं है। गोकुलचंद का सम्बंध कल्याणी नामक एक दूसरी महिला से भी उपन्यासकार ने दिखाया है। इस उपन्यास में लेखक ने जोन वालदिक तथा उनका खानसामा, गोकुलचंद, तथा चन्नन शाह, ये इन चारों के द्वारा गंगा की तथा चन्नन शाह द्वारा कल्याणी की बलात्कार की घटना का उल्लेख कर उनके मन में नारी के प्रति भोगवादी दृष्टि को दर्शाया है।

ii. क्षमा करना जीजी (1995) :

यह उपन्यास एक परिवार के सम्बन्धों के भावुक वातावरण को लेकर रचा गया है। लेकिन इसकी मूल व्यथा पारिवारिक सम्बन्धों तक ही सीमित नहीं है। पौराणिक कथा-भूमि से अलग यह नरेंद्र कोहली का एक सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास की कथा दिल्ली के हजरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशन से प्रारम्भ होती है। इस उपन्यास को पढ़ने से यह ज्ञात होता है कि भारत में किस प्रकार सटीक चिकित्सा का अभाव है। उपन्यास की पात्र ‘निर्मला’ कैंसर रोग से पीड़ित होकर अच्छी चिकित्सा प्राप्त करने हेतु बम्बई से दिल्ली आती है। विनीत के जीजाजी ने उसे लिखा था कि “डॉक्टरों का कहना है कि निर्मला को किसी ऐसे स्थान पर रखिए जहाँ आवश्यकता पड़ने पर उन्हें ऑक्सीजन दी जा सके”।4..

निर्मला दिल्ली आ तो गई थी परंतु यहाँ उसे ऑक्सीजन ही प्राप्त नहीं हुआ। उसके भाई विनीत ने तीन-चार स्थानों पर फोन के माध्यम से ऑक्सीजन के बारे में पूछा था।

परन्तु उसे उत्तर मिलता है कि रोगी को ऑक्सीजन की आवश्यकता क्यों है ? रोगी को ऑक्सीजन की आवश्यकता है यह बात वह कैसे जानता है ? अंत में एक स्थान उसे सूचना मिलती है कि ऑक्सीजन दिया जा सकता है। लेकिन वहाँ तक पहुंचते-पहुँचते निर्मला की मृत्यु हो जाती है। अंतिम समय में विनीत अपने जीजी के प्राणों की रक्षा नहीं कर पाता है। अतः वह अपनी बहन से क्षमा याचना करता है। जैसा कि उपन्यास का शीर्षक है क्षमा करना जीजी। इस उपन्यास में एक और बात उभरकर आती है कि समाज की स्थिति ऐसी है कि लोग अपने परिवार के दोषों को नहीं देखते हैं बल्कि दूसरों के परिवार के दोषों को देखते हैं। साथ ही साथ इस उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि महिलाएँ पतियों के लिए तभी तक उपयोगी प्रतीत होती हैं जब तक कि वे कार्यशील होती हैं। निर्मला जब कैंसर से पीड़ित होती है जब ऐसा लगता है कि जैसे अब वह उसका अपने पति के लिए कोई महत्व ही नहीं है। लेखक ने एक ऐसे पति का उल्लेख किया है जो पत्नी कैंसर जैसी एक भयंकर बीमारी की हालत में उसे अकेले छोड़कर रोज सैर करने चला जाता है। उसे अपनी छोटी बच्ची का भी ध्यान नहीं है। जीजी जब अपने कष्ट के बारे में अपने पति को बताती है तो उनके पति उन्हें समझाते हुए जो कहते हैं उसके विषय में जीजी विनीत को बताती है कि “वे मुझे समझाने लगते हैं कि मैं अधिक दिन जीवित रहने वाली नहीं। वे मुझे मेरी मृत्यु की प्रक्रिया समझा चुके हैं कि पहले कौन-सा अंग काम करना बंद करेगा, उसके बाद कौन-सा ! ... मुझे जीवित ही नहीं रहना है, तो मेरे लिए अपनी सैर क्यों छोड़े ! मरने वाले के साथ कोई मर तो नहीं जाता”।⁵..

यहाँ एक हीन मानसिकता सम्पन्न पति का वर्णन किया गया है।

iii. वरुणपुत्री (2017) :

यह उपन्यास लेखक नरेंद्र कोहली द्वारा लिखा गया एक ऐसा उपन्यास है जिसमें पौराणिक कथाएँ, इतिहास और समकालीन घटनाएँ जैसे भारत में घटित होने वाली आतंकवादी गतिविधियाँ आदि तथा फैंटेसी का एक बहुत ही अदभुत ताना-बाना बुना गया है। इस उपन्यास में एलियन की चर्चा है। उपन्यास की नायिका ‘वरुणपुत्री’ स्वयं एक

एलीयन है जो एक दूसरे ग्रह से पृथ्वी पर आती है। पृथ्वी का ही मनुष्य विनोद सीकर से उसका विवाह होता है और उपन्यास का पात्र विक्रम उसी का पुत्र है। विक्रम वरुणपुत्री का ही पुत्र है यह विक्रम को मालूम नहीं था इस बात की जानकारी उसे वरुणपुत्री से ही प्राप्त होती है। उसके पास ऐसी शक्तियाँ हैं जो इस पृथ्वी पर निवास करने वाले किसी मानव में नहीं है। इसकी कथावस्तु इतनी व्यापक है कि इसमें लेखक कोहली ने धरती के सभी देशों के अतिरिक्त अन्य ग्रहों और आकाश गंगा को सम्मिलित किया है। इसमें राजनीति, पर्यावरण सुरक्षा, विश्व शांति आदि को समेटा गया है। उपन्यास की कथा समय और भूगोल की सीमाओं को लाँघती चली जाती है और पाठक आनंदित एवं विस्मित हो जाता है।

iv. सागर-मंथन (2018) :

यह उपन्यास नरेंद्र कोहली का नवीन ढंग का उपन्यास है जिसमें आधुनिकता बोध समाया हुआ है। लेखक ने मुझे बताया कि “सागर-मंथन जो है उसका शीर्षक पौराणिक है कथा उसमें आधुनिक है”¹⁶.. आधुनिक विषयों को लेकर लिखे उपन्यासों के विषय में उन्होंने बताया कि “हर नई परिस्थिति से जो मेरे सामने आए उसे लिखने से घबराता नहीं हूँ, कोई नीति नहीं है कि अभी ये करना है, कोई योजना नहीं होती। मुझे कहा गया, मेरे विषय में कहा गया कि मैं प्रयोगशील हूँ”¹⁷.. इस उपन्यास के नाम से भले ही यह पौराणिक प्रतीत होता है लेकिन यह पौराणिक नहीं बल्कि समकालीन है। यह उपन्यास विदेशी धरती पर लिखा गया है। इसमें अनेक महाद्वीपों के लोगों की परम्पराओं के गुँथे होने और एक नया संसार गढ़ने की कथा है। जहाँ इतिहास है, वहाँ उस ऐतिहासिक काल की कड़वाहट भी है। इसके चरित्र व्यक्ति नहीं बल्कि वे प्रवृत्तियाँ हैं जो अभी स्थिर नहीं हो पायी हैं। वे परिवर्तन की चक्की में पीस रहे हैं और साथ ही साथ अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने का प्रयास भी कर रहे हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह परिवर्तन और नव निर्माण की कथा है।

आलोच्य उपन्यास में कथा का प्रारम्भ उपन्यास की पात्र ‘अमृता’ के साथ उसके पुत्र ‘विभु’ से दूरभाष पर वार्तालाप से होती है जो कि अमेरिका में है। अपनी माँ से जब उसके विवाह की बातचीत होती है तो वह बताता है कि उसकी एक गर्ल-फ्रेंड (girl-friend) है, तो यह सुन कर माँ को थोड़ा आश्चर्य होता है। ‘अमृता’ अपने पुत्र से हुई बातचीत की

जानकारी अपने पति उपन्यास के पात्र डॉक्टर 'कनिष्क कात्यायन को देती है। इस बात को सुनकर डॉक्टर कनिष्क कात्यायन सोचते हैं कि भारत में गर्ल-फ्रेंड और बाय-फ्रेंड वाली संस्कृति नहीं है बल्कि भारतीय समाज में पुत्रवधू को ही महत्व दिया जाता है गर्ल-फ्रेंड को नहीं। लेखक अपने पात्र कनिष्क कात्यायन से कहलवाते हैं कि "चाहता तो मैं भी हूँ कि उसका विवाह हो। उसके साथ उसकी पत्नी हो, बच्चे हों, परिवार हो। लड़की अमरीकी हो तो कोई बात नहीं, अमरीकी होगी तो ईसाई होगी, कोई बात नहीं। किंतु वह उसकी पत्नी हो गर्ल-फ्रेंड न हो"।⁶.. यह कहना चाह रहे हैं की जाती धर्म से परेशानी नहीं है लेकिन विवाहित पत्नी होनी चाहिए। इस उपन्यास में भारत के लोगों की अपनी संस्कृति को जानने की अनिच्छा तथा विदेशी लोगों को भारतीय संस्कृति को जानने की इच्छा को दर्शाया है। इस उपन्यास में लिज़ा की माँ एक विदेशी दुल्हन भारतीय संस्कृति को अपने विवाह समारोह में अपनाती है। इस बारे में लेखक नरेंद्र कोहली लिखते हैं कि "उधर दूल्हा और दुल्हन भी बटने से मुक्त हो कर नहा-धो कर आए थे। लिज़ा को बहुत समझाया कि वह पहले भोजन कर ले किंतु वह नहीं मानी। लाइन तोड़ कर वह मेहँदी लगाने जा बैठी।⁷.. आलोच्य उपन्यास में live-in-relationship के बारे में भी बात की गई है और यह बताया गया है कि इसे भारतीय समाज में स्वीकार नहीं किया जाता है। इस प्रकार के सम्बंध को एक अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता है। ऐसा प्रतीत होता है लेखक live-in-relation के पक्षपाती नहीं हैं। 'लिज़ा' का परिवार एक तरफ़ से कहा जाए तो परिवार के समस्त लोग चाहे वह लिज़ा के पिता टोरी साहब हों, उसकी माँ श्रीमती शैला हों या उसका भाई माइकेल हो वे सभी अपनी संस्कृति को जितना महत्व देते हैं उतना ही महत्व वे भारत की संस्कृति को भी देते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वेदों में जो साथ साथ बोलने और साथ-साथ चलने की बात की गई है उसी को एक मूर्त रूप देने का प्रयास आलोच्य उपन्यास में किया गया है।

लिज़ा नामक वह अमरीकी लड़की भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर भारत आती है। तथा विभु के पिता से भेंट होने पर भारतीय ढंग से उनका अभिवादन करती हैं। लेखक लिखते हैं कि "लिज़ा ने हाथ जोड़ कर नमस्ते की और मैंने उसके सिर पर हाथ रख आशीर्वाद

दिया”¹⁸.. लिज़ा न केवल भारतीय शैली में अभिवादन करना ही नहीं सीखा था बल्कि भारतीय भोजन भी ग्रहण करना सीख लिया था और उसे भारतीय भोजन ग्रहण करने में कोई परेशानी नहीं थी। लेखक इस विषय में लिखते हैं कि “लिज़ा की प्लेट देख मुझे आश्चर्य हुआ। उसने लगभग सारी ही सब्ज़ियाँ अपनी प्लेट में परोस रखी थी। वह सब कुछ खा रही थी, जैसे सदा से यही खाती रही हो.... जैसे वह किसी नए पराए देश में न हो ; जैसे यह भोजन उसके लिए अपरिचित न हो”¹⁹..

इस उपन्यास में यह भी बताया गया है कि भारत के लोग ही अपनी भाषा और संस्कृति का सम्मान नहीं करते हैं। उपन्यास के पात्र डॉक्टर कनिष्क के बड़े भाई मोहन के पुत्र ने एक तमिल हिंदू लड़की से विवाह कर लिया था। लेकिन उस तमिल परिवार ने कभी भी कनिष्क के बड़े भाई के परिवार को स्वीकार नहीं किया था क्योंकि भले ही धर्म एक हो लेकिन लड़के के परिवार में तमिल नहीं बोली जाती थी। यह एक पंजाबी भाषी परिवार था। कनिष्क कहते हैं कि “उनके पुत्र वरूण ने एक तमिल हिंदू लड़की पसंद कर ली थी। ... उसके विवाह के ही इतने विरुद्ध थे कि उनके घर मार-पीट शुरू हो गई थी।... फिर भी वे लोग विवाह के लिए सहमत नहीं थे। लड़के के घर में तमिल जो नहीं बोली जाती थी”¹⁰.. इस गद्यांश के द्वारा लेखक नरेंद्र कोहली ने यही बताया है कि इस 21वीं शताब्दी में भी अपने देश में साम्प्रदायिकता की लहर बनी हुई है।

v. प्रीति -कथा (2005) :

उपन्यासकार नरेंद्र कोहली का यह उपन्यास एक प्रेम कथा है। इसमें प्रेम के दर्शन की तमाम बारीकियों को रेखांकित किया गया है और जीवन की कुछ आधारभूत सच्चाइयों से रु-ब-रु कराते हुए कथा में अनूठे रंग भरे गए हैं। यह विनीत की कहानी है, जो केतकी और मल्लिका के बिना पूरी नहीं होती। इसमें अनुराग की दो धाराएँ हैं जो प्रेम के सागर में पहुँच कर विलीन हो जाना चाहती हैं, पर प्रेम के प्रति सरोकार अलग क्रिस्म के हैं। और फिर तीनों के जीवन में घटित प्रेम-प्रसंग कुछ इस तरह पूर्ण हुआ कि मल्लिका के लिए चाह में कमी विनीत को रही, तो केतकी स्वयं अपने प्रेम की कमी को स्वीकार करती है और

विनीत को अंत में पत्नी के रूप में शोभा मिली। और आखिर में केतकी एक अंतरंग सखी बनकर रह गई। इस प्रकार लेखक यहाँ प्रेम की पीड़ा का अनूठा ताप छोड़ जाते हैं।

आलोच्य उपन्यास में कथा की शुरुआत पेट्रोल पम्प से होती है और इसका समापन विनीत के घर पर केतकी के अपनी प्रीति-कथा चिंतन से होता है जिसकी शुरुआत जमशेदपुर में हुई थी। जब वे बी ए के विद्यार्थी थे। इस उपन्यास में कथा विनीत की है और वह अपनी कथा अपनी सखी केतकी पैटर्सन को सुनाता है जो कनाडा में रहती है और दिल्ली में एक संगोष्ठी में आई हुई है। केतकी का आगमन वहाँ concept of love विषय पर पर्चा पढ़ने के लिए होता है। विनीत स्वयं एक लेखक था अतः वह भी वहाँ पहुँचा हुआ था। केतकी विनीत की कॉलेज जीवन की सखी थी। वह केतकी को उसके जीवन में आनेवाली मल्लिका, चंदा और शोभा के बारे में बताता है। अंत में विनीत का विवाह शोभा से होता है। आलोच्य उपन्यास में प्रेम की परिभाषा देते हुए लेखक नरेंद्र कोहली अपने उपन्यास के पात्र विनीत से कहलवाते हैं कि “मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा केतकी कि जीवन की सार्थकता उसकी एकाग्रता में है। बिखराव में नहीं। यह एकाग्रता ही प्रेम है। एकाग्रता चाहे स्त्री के प्रति हो, चाहे पुरुष के प्रति, चाहे भगवान के प्रति हो ... जिसने एकाग्रता पा ली वह समाधि पा गया”¹¹.. यह कथन विनीत का केतकी से है। लेखक के अनुसार “एकाग्रता किसी भी कारण से जब एक सीमा के पार चली जाती है तो आप कहते हैं कि वो समाधिस्थ है”¹²..

vi. स्वामी विवेकानंद के जीवन पर आधारित छः खंडों में रचित तोड़ो कारा तोड़ो :

नरेंद्र कोहलीजी ने उपन्यास लेखन के क्षेत्र में जीवनीपरक उपन्यास लेखन में अपनी लेखनी चलाई है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद के जीवन को लेकर छः खण्डों में तोड़ो कारा तोड़ो नामक उपन्यास लिखा है। इस उपन्यास के प्रथम खंड का शीर्षक निर्माण है जिसमें स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व निर्माण के विविध आयामों पर प्रकाश डाला गया है। इसका क्षेत्र उनके जन्म से लेकर ठाकुर श्री रामकृष्ण परमहंस एवं माँ भवतारिणी के समक्ष निर्द्वन्द्व आत्मसमर्पण की कथा है इस उपन्यास के द्वितीय खंड का नाम साधना है जिसमें स्वामीजी

की अपने गुरु के चरणों में बैठकर की गई साधना तथा गुरु के देह-त्याग के उपरांत उनके आदेशानुसार अपने गुरुभ्राताओं को एक मठ में संगठित करने की कथा है। ठीक इसी प्रकार तीसरे खंड परिव्राजक में उनके एक अज्ञात सन्यासी के रूप में कोलकाता से द्वारिका तक भ्रमण की कथा है। चौथे खंड निर्देश में द्वारिका के सागर-तट पर बैठकर स्वामीजी के द्वारा भारत की दुर्दशा देखकर आँसू बहाने की कथा है। इस खंड में यह भी बताया गया है कि वे एक नवीन संकल्प लेकर उठे और विभिन्न देशी राज्यों एवं रजवाड़ों से होते हुए कन्याकुमारी पहुँचे, जहाँ उन्होंने अपनी तीन दिनों की समाधि में जगदम्बा और भारतमाता का दर्शन एक साथ किया। स्वामीजी के मद्रास पहुँचने की कथा एवं वहाँ के नवयुवकों में एक संगठित दल के द्वारा उन्हें शिकागो के धर्मसंसद में भेजने का निश्चय किए जाने की कथा भी है। संदेश में स्वामीजी जो संदेश सम्पूर्ण विश्व को देना चाहते थे उसका चित्रण किया गया है। समस्त घटनाएँ अमेरिका की हैं एवं सारे पात्र अमरीकी हैं। ग्रीनेकर रिलीजस कांफ्रेंस, टेंडरपोल की 33 वी० वीथी की बहुत सारी घटनाओं का परिचय भी पाठकों को इस खंड में मिलता है। इस उपन्यास के अंतिम खंड का नाम प्रसार है। इस खंड में एक ओर जहाँ स्वामीजी के संदेश के वैश्विक होने का चित्रण है, वहीं दूसरी ओर इस आंदोलन के अंतर्राष्ट्रीय होने की कथा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- 1 नरेंद्र कोहली, पुनरारंभ, पृष्ठभूमि के विश्लेषण
- 2 नरेंद्र कोहली, पुनरारंभ, पृष्ठ संख्या 20
- 3 नरेंद्र कोहली, पुनरारंभ, पृष्ठ संख्या 20
- 4 नरेंद्र कोहली, क्षमा करना जीजी, पृष्ठ संख्या 12
- 5 नरेंद्र कोहली, क्षमा करना जीजी, पृष्ठ संख्या 96
- 6 मेरे द्वारा लेखक नरेंद्र कोहली का 15/11/2020 को रविवार के दिन लिया गया साक्षात्कार

- 7 मेरे द्वारा लेखक नरेंद्र कोहली का 15/11/2020 को रविवार के दिन लिया गया साक्षात्कार
- 8 सागर-मंथन, नरेंद्र कोहली, पृष्ठ संख्या 17
- 9 सागर-मंथन, नरेंद्र कोहली, पृष्ठ संख्या 27
- 10 सागर-मंथन, नरेंद्र कोहली, पृष्ठ संख्या 63
- 11 प्रीति कथा, नरेंद्र कोहली, पृष्ठ संख्या 56
- 12 मेरे द्वारा लेखक नरेंद्र कोहली का 15/11/2020 को रविवार के दिन लिया गया साक्षात्कार